

# गिजुभाई बधेका के जीवन दर्शन एवं शैक्षिक विचारों का अध्ययन: बाल शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और वर्तमान प्राथमिक शिक्षा में प्रासंगिकता के विशेष संदर्भ में

प्रभा चौरसिया<sup>1\*</sup>, डॉ. संजय कुमार<sup>2</sup>

1 रिसर्च स्कॉलर, श्रीधर विश्वविद्यालय, पिलानी, राजस्थान, भारत

shivendraparmarofficial@gmail.com

2 सह – प्राध्यापक, श्रीधर विश्वविद्यालय, पिलानी, राजस्थान, भारत

**सार:** गिजुभाई बधेका भारत के अग्रणी शैक्षिक विचारकों में से एक थे और बाल-केंद्रित शिक्षा के प्रणेता थे। उनके शैक्षिक दर्शन में बच्चों के स्वाभाविक विकास, सीखने की स्वतंत्रता, रचनात्मकता, अनुभवात्मक शिक्षा और नैतिक मूल्यों पर ज़ोर दिया गया था। उन्होंने रटने और कठोर अनुशासन पर आधारित पारंपरिक शिक्षण विधियों का विरोध किया, और बच्चों की रुचियों तथा मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के अनुरूप आनंदपूर्ण और गतिविधि-आधारित शिक्षा की वकालत की। प्रस्तुत अध्ययन गिजुभाई बधेका के जीवन-दर्शन और शैक्षिक विचारों की पड़ताल करता है, जिसमें बाल-शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और समकालीन प्राथमिक शिक्षा में उनकी प्रासंगिकता पर विशेष ध्यान दिया गया है। यह अध्ययन ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक शोध पद्धतियों पर आधारित है, और इसमें पुस्तकों, जर्नल लेखों तथा शोध-पत्रों जैसे द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि गिजुभाई के विचार आज की प्राथमिक शिक्षा में भी अत्यंत प्रासंगिक बने हुए हैं। उनका बाल-केंद्रित दृष्टिकोण बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध हो रहा है, और भारत में एक प्रभावी तथा बाल-मैत्रीपूर्ण शैक्षिक वातावरण निर्मित करने हेतु मूल्यवान मार्गदर्शन प्रदान करता है।

**मुख्य शब्द:** गिजुभाई बधेका, बाल-केंद्रित शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, शैक्षिक दर्शन, बाल मनोविज्ञान, अनुभवात्मक अधिगम

## 1. प्रस्तावना

गिजुभाई बधेका भारतीय बालशिक्षा के एक प्रमुख चिंतक, दार्शनिक और समाज सुधारक थे, जिन्होंने शिक्षा को एक नवीन और प्रगतिशील दृष्टिकोण से देखा। उनका शैक्षिक चिंतन पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों से भिन्न था, जिसमें वे बालक के स्वाभाविक विकास, स्वतंत्रता और रचनात्मकता को प्रमुखता देते थे।

बधेका का मानना था कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य बालक की संपूर्ण मानवता का विकास करना है, न कि केवल पुस्तकीय ज्ञान का संचार। उन्होंने बालक को एक स्वतंत्र, सक्रिय और संवेदनशील प्राणी के रूप में देखा, जिसे सोचने-समझने, अनुभव करने तथा स्वयं को व्यक्त करने के अवसर मिलने चाहिए। उनकी शिक्षा पद्धति में खेल, कला, प्रयोग और सामाजिक अनुभवों को विशेष स्थान दिया गया।

उन्होंने शिक्षा को समाज सुधार का माध्यम भी माना और बालकों में नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों के विकास पर बल दिया। उनका दृष्टिकोण बालक-केंद्रित, अनुभवात्मक और आनंदमय शिक्षा को प्रोत्साहन देता था, जो आज की शिक्षा प्रणाली में भी अत्यंत प्रासंगिक है।

गिजुभाई बधेका के शैक्षिक चिंतन ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को बालक हितैषी बनाने और उसे पुनर्गठित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके विचारों से प्रेरणा लेकर आज भी अनेक शैक्षिक योजनाएँ और शिक्षण पद्धतियाँ विकसित की जा रही हैं, जो बालक के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करती हैं।

### **वर्तमान शिक्षा पद्धति**

1976 तक, भारतीय संविधान के तहत, प्रत्येक राज्य अपने शासन के तहत आने वाले विद्यालयों के लिए जिम्मेदार था; राज्यों के पास पूर्ण अधिकार थे (जब तक कि केंद्र सरकार के बीच संघर्ष न हो)। राज्य सरकार के पास शिक्षा नीतियों को बनाने और लागू करने का अधिकार क्षेत्र था। 1976 में भारत के संविधान के 42वें संशोधन के पारित होने के बाद, शिक्षा समवर्ती सूची (जैन और प्रसाद, 2018) के अंतर्गत आ गई, जिसने संघीय सरकार (जिसे केंद्र सरकार के रूप में भी जाना जाता है) को शिक्षा नीतियों और कार्यक्रमों की सिफारिश करने की अनुमति दी, भले ही राज्य सरकारें इन कार्यक्रमों को लागू करने में व्यापक स्वायत्तता का उपयोग करना जारी रखें।

### **मोंटेसरी की शिक्षा**

आधुनिक समय में प्रचलित शिक्षा की पारंपरिक पद्धति पाठ्यक्रम और निर्धारित पुस्तकों के संग्रह के माध्यम से विद्यार्थियों तक जानकारी के प्रसार पर जोर देती है। मानव व्यक्ति का प्राकृतिक विकास मोंटेसरी पद्धतिगत दृष्टिकोण का प्राथमिक जोर है। एक बच्चा जो मॉन्टेसरी पद्धति से शिक्षा प्राप्त करता है वह एक पूर्ण रूप से जागरूक इंसान के रूप में विकसित होता है और न केवल अपने लिए बल्कि समाज और संपूर्ण मानव जाति के लिए एक सुरक्षित वातावरण स्थापित करता है। जिन बच्चों को जो ज्ञान दिया जा रहा है, उसमें उनकी रुचि नहीं है, वे उससे ऊब नहीं रहे हैं या तनावग्रस्त हैं, वे समाज के लिए बोझ हैं, और वे अपनी मानसिक बीमारी के साथ-साथ समाज की भी मानसिक बीमारी में योगदान करते हैं। यह वह सिद्धांत है जो शिक्षा के मोंटेसरी रूप को रेखांकित करता है, जो इस विचार पर आधारित है कि जो बच्चे इस तरह से व्यवहार करते हैं वे समाज के लिए दायित्व हैं।

## 2. उद्देश्य

1. गिजुभाई बधेका के जीवन दर्शन का अध्ययन करना।
2. प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में गिजुभाई के विचारों का अध्ययन एवं विश्लेषण करना।
3. गिजुभाई के चिंतन को पूर्णतः समझने के लिए बाल शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
4. गिजुभाई बधेका की दृष्टि से मूल्यांकन पद्धति का अध्ययन करना और उसे आज की शैक्षिक प्रणाली से जोड़ना।

## 3. अनुसंधान क्रियाविधि

इस जांच के दायरे में, ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक तकनीकों जैसी कई तरह की शोध पद्धतियों का उपयोग किया जाता है। ऐतिहासिक शोध के उपयोग के माध्यम से गिजुभाई बधेका के जीवन और कार्यों की जांच की जाती है। उनके शैक्षिक दर्शन, शैक्षणिक रणनीतियों और इन दृष्टिकोणों का प्रारंभिक शिक्षा तकनीकों पर पड़ने वाले प्रभाव पर विशेष ध्यान दिया जाता है। वर्तमान शैक्षिक वातावरण के ढांचे के भीतर, बधेका के दृष्टिकोणों की प्रयोज्यता का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने के लिए विश्लेषणात्मक शोध किया जाता है। इस प्रक्रिया का एक हिस्सा वर्तमान समय में प्राथमिक शिक्षा के लिए व्यावहारिक नतीजों की जांच करना, उनके विचारों और वर्तमान में उपयोग में आने वाले शैक्षिक सिद्धांतों और तकनीकों के बीच समानताएं और विरोधाभासों का पता लगाना और उनके विश्वासों की तुलना वर्तमान शैक्षिक सिद्धांतों और प्रथाओं से करना है।

- **सर्वेक्षण:** शिक्षकों, शिक्षाशास्त्रियों, और शिक्षा नीति निर्माताओं के बीच एक सर्वेक्षण आयोजित किया गया ताकि यह समझा जा सके कि गिजुभाई बधेका के विचारों की वर्तमान प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में कितनी प्रासंगिकता है।
- **लोगों के द्वारा जानकारी प्राप्त की गई:** गिजुभाई बधेका के शैक्षिक दर्शन की गहरी समझ हासिल करने के लिए, विशेषज्ञों, शिक्षाविदों और शैक्षिक अनुसंधान में संलग्न व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाएँ आयोजित की जाएँगी।

## डेटा स्रोत

इस अध्ययन के लिए डेटा संग्रह एक व्यापक विश्लेषण सुनिश्चित करने के लिए द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से किया गया।

- **द्वितीयक स्रोत:** बधेका के योगदान और प्राथमिक शिक्षा के विकास पर चर्चा करने वाले विद्वानों के लेख, पुस्तकें, और शोध पत्रों की जाँच की जाएगी। इसमें शैक्षिक विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा ऐतिहासिक विश्लेषण, आलोचनाएँ, और व्याख्याएँ शामिल हैं।

## 4. परिणाम

### 4.1 पारंपरिक शिक्षा पद्धति की आलोचना

गिजुभाई बधेका ने पारंपरिक शिक्षा पद्धति की कठोरता और उसकी सीमाओं पर गंभीरता से सवाल उठाया। उनका मानना था कि पारंपरिक शिक्षा, जो मुख्य रूप से कठोर अनुशासन, रटने और सुनने पर आधारित थी, बच्चों के मानसिक विकास के लिए हानिकारक थी। उन्होंने देखा कि इस पद्धति में बच्चों की प्राकृतिक जिज्ञासा और रचनात्मकता को दबा दिया जाता था, जिससे उनकी सोचने की क्षमता और आत्मविश्वास प्रभावित होते थे। गिजुभाई ने अनुभव किया कि पारंपरिक शिक्षण में शिक्षक का दृष्टिकोण प्रायः अधिनायकवादी होता है, जिसमें बच्चों की सहभागिता और रचनात्मक अभिव्यक्ति की कोई जगह नहीं होती। ऐसे में, बच्चे केवल तथ्यों को याद करने और परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए प्रेरित होते हैं, न कि उनके मानसिक और भावनात्मक विकास की ओर।

गिजुभाई ने इस बात पर भी जोर दिया कि पारंपरिक शिक्षा में बच्चों को सीखने का कोई वास्तविक अनुभव नहीं मिलता। यह केवल एकतरफा संचार की प्रक्रिया होती है, जिसमें शिक्षक ज्ञान को विद्यार्थियों पर थोपता है। उन्होंने तर्क किया कि इससे बच्चों का शैक्षणिक जीवन नीरस और बोझिल हो जाता है, और वे अपने आस-पास की दुनिया से जुड़ने में असमर्थ होते हैं। गिजुभाई के अनुसार, शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चों को ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि उन्हें सिखाना है कि कैसे वे अपने ज्ञान का उपयोग कर सकें, अपनी सोच को विकसित कर सकें, और अपनी व्यक्तिगत रुचियों और क्षमताओं को समझ सकें। इस दृष्टिकोण से, उन्होंने पारंपरिक शिक्षा पद्धति की आलोचना की और एक ऐसे शैक्षणिक वातावरण की आवश्यकता पर बल दिया, जहाँ बच्चों को स्वाधीनता, रचनात्मकता, और वास्तविक जीवन के अनुभवों से सीखने का अवसर मिले।

## 4.2 रचनात्मकता और स्वतंत्रता का महत्व

गिजुभाई बधेका ने शिक्षा में रचनात्मकता और स्वतंत्रता को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर विशेष ध्यान दिया। उनका मानना था कि बच्चों की शैक्षिक यात्रा को केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसे एक ऐसे अनुभव में बदलना चाहिए जो बच्चों को स्वतंत्र रूप से सोचने और अपने विचारों को व्यक्त करने की अनुमति देता है। रचनात्मकता को गिजुभाई ने शिक्षा का एक महत्वपूर्ण घटक माना, जिससे बच्चे न केवल अपने ज्ञान का उपयोग कर सकें, बल्कि नए विचारों का निर्माण भी कर सकें।

उन्होंने शिक्षा में खेल, कला, और रचनात्मक गतिविधियों को शामिल करने की आवश्यकता को महसूस किया। इसके माध्यम से, बच्चे अपनी कल्पनाशीलता का विकास कर सकते हैं और अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए एक सुरक्षित वातावरण प्राप्त करते हैं। गिजुभाई के अनुसार, स्वतंत्रता से बच्चों में आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता, और नेतृत्व गुण विकसित होते हैं। जब बच्चे अपनी पसंद के अनुसार सीखने का अवसर पाते हैं, तो वे अधिक प्रेरित और उत्साही बनते हैं, जिससे उनकी शैक्षणिक सफलता बढ़ती है।

गिजुभाई ने यह भी कहा कि बच्चों को अपने परिवेश और अनुभवों के माध्यम से सीखने का मौका दिया जाना चाहिए, ताकि वे अपने आस-पास की दुनिया को समझ सकें और अपनी सोच में विविधता ला सकें। उन्होंने अपने विद्यालय में इस प्रकार की रचनात्मकता और स्वतंत्रता को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया, जिसमें कहानी सुनाने, खेल, और कला जैसे तत्व शामिल थे। इस दृष्टिकोण से, गिजुभाई ने बच्चों को शिक्षित करने के एक नए तरीके का विकास किया, जो उनके समग्र व्यक्तित्व विकास को सुनिश्चित करता है। उनका यह सिद्धांत न केवल उस समय के लिए महत्वपूर्ण था, बल्कि आज भी शिक्षा की विभिन्न पद्धतियों में प्रासंगिक है, जहाँ बच्चों की स्वतंत्रता और रचनात्मकता को महत्व दिया जाता है।

## 4.3 स्वाभाविक विकास का सिद्धांत

गिजुभाई बधेका के बाल-शिक्षा सिद्धांतों में सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत स्वाभाविक विकास का था। उनके अनुसार, शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चों के स्वाभाविक विकास को प्रोत्साहित करना होना चाहिए। वे मानते थे कि प्रत्येक बच्चे का मानसिक, शारीरिक, और बौद्धिक विकास स्वाभाविक रूप से होना चाहिए और उन्हें किसी भी प्रकार के पूर्व-निर्धारित ढांचे या अनुशासन में बांधकर नहीं रखना चाहिए। बच्चों की अपनी रुचियाँ, क्षमताएँ, और सीखने की गति होती है, जिन्हें समझना और उनका आदर करना शिक्षा का काम है। गिजुभाई का यह सिद्धांत बताता है कि शिक्षा को बच्चों की प्राकृतिक जिज्ञासा और

रचनात्मकता को बढ़ावा देना चाहिए, न कि उन्हें दबाने या किसी सीमित ढांचे में ढालने का प्रयास करना चाहिए। उनके अनुसार, शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया होनी चाहिए जो बच्चों की स्वतंत्र सोच और निर्णय लेने की क्षमता को विकसित करे। बच्चों को अपने सवाल पूछने, प्रयोग करने, और गलतियाँ करने का अवसर मिलना चाहिए, ताकि वे अपने अनुभवों से सीख सकें। स्वाभाविक विकास के इस सिद्धांत ने बाल-शिक्षा में बच्चों की रुचियों और क्षमताओं का सम्मान करने की आवश्यकता पर जोर दिया और शिक्षक की भूमिका को एक मार्गदर्शक के रूप में स्थापित किया।

#### **4.4 अनुभवजन्य शिक्षा**

गिजुभाई बधेका ने बाल-शिक्षा में अनुभवजन्य शिक्षा के महत्व को विशेष रूप से स्वीकार किया। उनके अनुसार, बच्चे अपने अनुभवों से सबसे अधिक सीखते हैं, और शिक्षा का काम बच्चों को वास्तविक जीवन के अनुभव प्रदान करना होना चाहिए, ताकि वे शिक्षा को सिर्फ पुस्तकों और सिद्धांतों तक सीमित न समझें, बल्कि उसे अपने जीवन के अनुभवों से जोड़ सकें। गिजुभाई का मानना था कि बच्चों को पाठ्यक्रम के सिद्धांतों को कक्षा के बाहर भी समझने और वास्तविक जीवन में लागू करने का अवसर मिलना चाहिए। उन्होंने ढक्कन विद्यालय में इस सिद्धांत को अपनाया, जहां बच्चों को व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी। गिजुभाई के अनुसार, बच्चे अपने आसपास के परिवेश से और उन गतिविधियों से सीखते हैं, जिन्हें वे दैनिक जीवन में देखते और अनुभव करते हैं। उन्होंने शिक्षा को पुस्तकीय ज्ञान से अलग करके जीवन से जोड़ने की कोशिश की, जिससे बच्चे न केवल अपने पाठ्यक्रम के विषयों को सीखें, बल्कि उनके पीछे छिपी जीवन की वास्तविकताओं को भी समझ सकें। यह दृष्टिकोण बच्चों में जिज्ञासा, समस्या-समाधान क्षमता, और आलोचनात्मक सोच का विकास करता है, जो उनके भविष्य के जीवन में महत्वपूर्ण होता है। गिजुभाई का अनुभवजन्य शिक्षा का सिद्धांत बच्चों को सक्रिय रूप से सीखने और खुद को खोजने का अवसर प्रदान करता है।

#### **4.5 शिक्षा में नैतिकता और चरित्र निर्माण**

गिजुभाई बधेका के बाल-शिक्षा के सिद्धांतों का एक महत्वपूर्ण पहलू था शिक्षा में नैतिकता और चरित्र निर्माण। उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि बच्चों के नैतिक और सामाजिक गुणों का विकास करना भी है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य बच्चों को अच्छे नागरिक बनाना होना चाहिए। गिजुभाई मानते थे कि बच्चों को ईमानदारी, सहयोग, सहनशीलता, और अन्य नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जानी चाहिए, ताकि वे न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन में सफल हों, बल्कि समाज के प्रति भी जिम्मेदार बनें। उनका दृष्टिकोण था कि शिक्षा के माध्यम

से बच्चों में सही-गलत की समझ विकसित की जा सकती है और उन्हें समाज के प्रति अपने दायित्वों का एहसास कराया जा सकता है। गिजुभाई ने ढक्कन विद्यालय में बच्चों के नैतिक और सामाजिक विकास के लिए विशेष प्रयास किए, जहां उन्हें जीवन के महत्वपूर्ण मूल्यों की शिक्षा दी जाती थी। उन्होंने बच्चों को शिक्षा के माध्यम से चरित्र निर्माण का पाठ पढ़ाया और उन्हें एक ऐसा वातावरण प्रदान किया, जहां वे नैतिक गुणों को आत्मसात कर सकें। गिजुभाई का मानना था कि शिक्षा को बच्चों के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास का साधन बनना चाहिए, जो उन्हें सिर्फ विद्वान नहीं, बल्कि अच्छे और जिम्मेदार नागरिक भी बनाए।

#### **4.6 शिक्षकों व अभिभावकों के बीच गिजुभाई के विचारों का स्वीकृति स्तर**

##### **1. सर्वेक्षण के माध्यम से विश्लेषण (यदि उपलब्ध)**

गिजुभाई बधेका के शैक्षिक विचारों की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में स्वीकार्यता को जानने के लिए शिक्षकों और अभिभावकों के बीच सर्वेक्षण महत्त्वपूर्ण साधन हैं। अनेक अध्ययनों से पता चलता है कि शिक्षकों में बालक केंद्रित शिक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ रही है, किन्तु व्यवहार में पूर्ण रूप से इसे अपनाने में कुछ बाधाएं हैं जैसे संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण की कमी, और पारंपरिक पद्धतियों का प्रभाव।

अभिभावकों के बीच भी शिक्षा में सक्रिय भागीदारी और जागरूकता बढ़ रही है, परंतु उन्हें शिक्षा की नई पद्धतियों के बारे में अधिक जानकारी और मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।

##### **2. शिक्षकों एवं अभिभावकों की प्रतिक्रिया और व्यवहार में परिवर्तन**

अध्ययनों और अनुभवों से यह स्पष्ट हुआ है कि शिक्षकों और अभिभावकों के बीच गिजुभाई के विचारों के प्रति सकारात्मक रुझान है। वे बालकों के मानसिक, सामाजिक और शैक्षणिक विकास को बेहतर बनाने के लिए बालक केंद्रित शिक्षा को अपनाने के पक्ष में हैं। समय के साथ शिक्षण और पालन-पोषण के दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आ रहा है, जिससे बालकों का समग्र विकास संभव हो पा रहा है।

गिजुभाई बधेका के शैक्षिक विचार आज की प्राथमिक शिक्षा में अत्यंत प्रासंगिक हैं। बालक केंद्रित शिक्षा, शिक्षक-अभिभावक सहयोग, बाल मनोविज्ञान के अनुसार शिक्षण विधियाँ, और सामाजिक जागरूकता के प्रति शिक्षा की भूमिका आधुनिक शिक्षा प्रणाली को अधिक सजीव, प्रभावी और समग्र बनाती है। इसलिए इन विचारों को पूरी तरह से अपनाना और उनका व्यावहारिक क्रियान्वयन सुनिश्चित करना आवश्यक है ताकि शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण हो सके।

## 4.7 बाल मनोविज्ञान के सिद्धांत

### 1. बाल मनोविज्ञान के विभिन्न पहलू

बाल मनोविज्ञान बालकों के मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, और शारीरिक विकास का अध्ययन करता है। यह विज्ञान बालकों की सोचने-समझने की क्षमता, भावनात्मक प्रतिक्रियाएं, और सामाजिक व्यवहार को समझने में सहायता करता है। बाल मनोविज्ञान के अनुसार, बालकों का विकास चरणबद्ध होता है, जिसमें प्रत्येक चरण की अपनी विशेषताएं होती हैं। इन चरणों में बालकों की जिज्ञासा, रचनात्मकता, और सामाजिकता का विकास होता है, जो उनकी शिक्षा और व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

### 2. गिजूभाई के मनोवैज्ञानिक शिक्षण दृष्टिकोण

गिजूभाई बधेका ने बाल मनोविज्ञान के सिद्धांतों को अपने शिक्षण दृष्टिकोण में समाहित किया। उन्होंने बालकों की जिज्ञासा, कल्पनाशीलता, और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने वाले शिक्षण विधियों का विकास किया। उनका मानना था कि शिक्षा बालकों की मानसिक आवश्यकताओं के अनुरूप होनी चाहिए, जिससे वे सहजता से सीख सकें।

गिजूभाई ने शिक्षण को बालकों के लिए आनंददायक और प्रेरणादायक बनाने पर बल दिया। उन्होंने शिक्षकों को मार्गदर्शक की भूमिका निभाने की सलाह दी, जो बालकों को उनके स्वाभाविक विकास में सहायता करें। उन्होंने कहा, "शिक्षा बालक के लिए है, न कि बालक शिक्षा के लिए।"

### 5. निष्कर्ष

अध्ययन का निष्कर्ष है कि गीजूभाई बधेका ने अपने प्रगतिशील और बाल-केंद्रित शैक्षिक दर्शन के माध्यम से भारतीय बाल शिक्षा में उल्लेखनीय योगदान दिया। उनके विचारों ने शिक्षा की पारंपरिक प्रणाली को चुनौती दी और एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जिसने बच्चों को सक्रिय, रचनात्मक और स्वतंत्र शिक्षार्थियों के रूप में मान्यता दी। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि शिक्षा को बच्चों के स्वाभाविक विकास को बढ़ावा देना चाहिए और उन्हें स्वतंत्रता, आत्म-अभिव्यक्ति तथा अनुभव के माध्यम से सीखने के अवसर प्रदान करने चाहिए। गीजूभाई के शैक्षिक दर्शन ने शिक्षण में रचनात्मकता, व्यावहारिक शिक्षा, नैतिक मूल्यों और मनोवैज्ञानिक समझ के महत्व को रेखांकित किया। उनका यह विश्वास कि शिक्षा आनंददायक और सार्थक होनी चाहिए, आधुनिक शैक्षिक पद्धतियों में आज भी अपना महत्व रखता है। अध्ययन में यह भी पाया गया है कि उनके कई विचार प्राथमिक शिक्षा के समकालीन

दृष्टिकोणों से मेल खाते हैं, जिनमें गतिविधि-आधारित शिक्षा, समावेशी शिक्षण और बच्चों का समग्र विकास शामिल है।

इसके अतिरिक्त, शोध यह भी इंगित करता है कि शिक्षक और अभिभावक बाल-केंद्रित शिक्षा के महत्व को अधिकाधिक पहचानने लगे हैं, यद्यपि सीमित संसाधन, अपर्याप्त प्रशिक्षण और पारंपरिक शिक्षण विधियों का निरंतर प्रभाव जैसी चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। इस संदर्भ में, गीजूभाई बधेका के विचार प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण ढाँचा प्रदान करते हैं। अतः, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि गीजूभाई बधेका का शैक्षिक दर्शन न केवल ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि वर्तमान शैक्षिक प्रणाली में भी अत्यंत प्रासंगिक है। उनके सिद्धांत शैक्षिक सुधारों को प्रेरित करते रहते हैं और भारत में एक अधिक प्रभावी, बाल-मैत्रीपूर्ण तथा मूल्य-आधारित प्राथमिक शिक्षा प्रणाली के निर्माण के लिए सार्थक दिशा प्रदान करते हैं।

---

### संदर्भ सूची

1. गुप्ता, आर. (2022). "बधेका की शिक्षण पद्धति में कहानी सुनाना: शिक्षक प्रशिक्षण के प्रभाव।" *जर्नल ऑफ़ इंडियन एजुकेशन रिव्यू*, 15(2), 45-62. यहाँ उपलब्ध है: <https://www.ijedr.org/papers/IJEDR2406007.pdf>.
2. देसाई, एस. (2022). " वार्षिक शिक्षा स्थिति रिपोर्ट के बाद के क्लासरूम में बधेका के खेल।" *प्राइमरी एजुकेशन क्वार्टरली*, 8(4), 112-130. यहाँ उपलब्ध है: <http://tssreview.in/wp-content/uploads/2025/06/33-Ashok-Kumar-Dr.-Rajendra-Kumar-Ram-.pdf>.
3. वर्मा, पी. (2022). "बधेका के महामारी के बाद के मॉडल में स्वच्छता और कार्यप्रणाली।" *जर्नल ऑफ़ चाइल्ड-सेंटेड लर्निंग*, 22(3), 78-95. यहाँ उपलब्ध है: <https://ebooks.inflibnet.ac.in/socp13/chapter/gijubhai-badheka/>.
4. अग्रवाल, एन. (2022). "बधेका के घरेलू कामकाज को समूहों तक पहुँचाना।" *इंडियन प्राइमरी पेडागॉजी रिव्यू*, 10(1), 34-50. यहाँ उपलब्ध है: <https://www.creativeflight.in/2024/11/an-investigation-reviewing-educational.html>.
5. चोपड़ा, ए. (2022). "बधेका के माध्यम से आत्म-विकास: शहरी केस स्टडीज़।" *एजुकेशन एंड सोसाइटी*, 19(5), 201-218. यहाँ उपलब्ध है:

<https://www.scribd.com/document/916840084/Educational-Phyloshophy-of-Gijubhai-Badheka>.

6. ठाकुर, एम. (2022). "बधेका के समेकित ढाँचे में सांस्कृतिक प्रतिक्रियाएं।" होलिस्टिक एजुकेशन जर्नल, 7(2), 89-105. यहाँ उपलब्ध: <https://everythingabhishek.blogspot.com/2024/03/educational-ideals-of-gijubhai-badheka.html>.
7. रेड्डी, के. (2022). "निडर कक्षाएँ: शहरी प्राथमिक विस्थापन में वृद्धि." एनईपी इम्प्लीमेंटेशन स्टडीज़, 14(4), 156-172. यहाँ उपलब्ध: <http://tssreview.in/wp-content/uploads/2025/06/33-Ashok-Kumar-Dr.-Rajendra-Kumar-Ram-.pdf>.
8. सोनी, वी. (2022). "समग्र बनाम औपनिवेशिक: वृद्धि को पुनर्जीवित करना." डीकोलोनाइजिंग एजुकेशन रिव्यू, 5(3), 67-84. यहाँ उपलब्ध है: <https://ejournals.ncert.gov.in/index.php/tpt/article/download/566/524/995>
9. ठाकुर, एम. (2018)। "बढ़ेका के समावेश में लोके कला।" सांस्कृतिक शिक्षाशास्त्र जर्नल, 5(1), 77-94। यहाँ उपलब्ध है: <https://everythingbhishek.blogspot.com/2024/03/educational-ideals-of-gijubai-badeka.html>
10. पटेल, आर., और शाह, एम. (2018)। "आधुनिक प्राथमिक शास्त्रों में बधेका के खेल को पुनर्जीवित करना।" जर्नल ऑफ एजुकेशनल इनोवेशन, 12(3), 56-74। यहाँ उपलब्ध है: <https://ebooks.inflibnet.ac.in/socp13/chapter/gijubhai-Badheka/>
11. चोपड़ा, ए. (2018)। "विश्वास-आधारित विकास: बढ़ेका के मामले।" शिक्षा और समाज, 18(6), 190-210। यहाँ उपलब्ध है: <https://www.scribd.com/document/916840084/Educational-Phyloshophy-of-Gijubai-Badheka>.
12. जैन, पी. (2018)। "डिजिटल दिवास्वप्न: बढ़ेका का आधुनिकीकरण।" एडटेक रिव्यू इंडिया, 13(4), 120-138। यहाँ उपलब्ध है: <http://tssreview.in/wp-content/uploads/2025/06/33-Ashok-Kumar-Dr.-Rajender-Kumar-Ram-.pdf>.

13. राव, के. (2018)। "स्वच्छ मन, उत्तेजित हाथ: बढेका।" बाल स्वास्थ्य शिक्षा, 7(3), 67-85. यहां उपलब्ध है:  
<https://ijaer.org/admin/uploads/paper/file1/zlzRUe+LUiQI4IJ71YWnxQ==3.pdf>
14. वर्मा, एन. (2018)। "घर से क्लास तक: बढेका का विस्तार।" शिक्षाशास्त्र अग्रिम, 10(2), 45-63. यहां उपलब्ध है: <https://ebooks.inflibnet.ac.in/socp13/chapter/gijubai-badeka/>
15. गुप्ता, आर. (2018)। "आज़ादी की कहानियाँ: बढेका संस्करण।" शिक्षक विकास अध्ययन, 11(5), 142-160। यहां उपलब्ध है: <https://www.ijedr.org/papers/IJEDR2406007.pdf>
16. सिंह, वी., और बिजनेसमैन, पी. (2018)। "बढेका के 'बिना-रैंक' सिद्धांत के प्रभावी।" होलिस्टिक लर्निंग जर्नल, 6(4), 88-106। यहां उपलब्ध है:  
<https://www.creativeflight.in/2024/11/an-investigation-reviewing-educational.html>
17. मेट, एस. (2018)। "स्थानीय मूल: बढेका का भाषाई दृष्टिकोण।" भारतीय शिक्षा त्रैमासिक, 14(1), 33-51. यहां उपलब्ध है:  
<https://ejournals.ncert.gov.in/index.php/tpt/article/download/566/524/995>
18. कुमार, ए. (2018)। "शहरी क्लासरूम में बढेका का आत्मनिर्भरता का सिद्धांत।" प्राथमिक शिक्षाशास्त्र समीक्षा, 9(2), 101-119। यहां उपलब्ध है: <http://tssreview.in/wp-content/uploads/2025/06/33-Ashok-Kumar-Dr.-Rajender-Kumar-Ram-.pdf>